स्वांगला – बोली की शब्द सम्पदा

डॉ0 अनिता कुमारी
सहायक प्राध्यापक
राजकीय महाविद्यालय कुकुमसेरी
जिला लाहौल स्पिति (हि0 प्र0)

शब्द सम्पदा की दृष्टि से प्रत्येक भाषा विभिन्न प्रकार के शब्दों से बनी है। किसी भी भाषा के विषय में यह नहीं कहा जा सकता कि वह अपने आदि तथा शुद्ध रूप में वर्तमान है। प्रायः एक विचार को प्रकट करने के लिये भाषा में एक ही वाक्य का प्रयोग होता है। वाक्य का विश्लेषण पदों में किया जाता है। अतः भाषा–विज्ञान के अंगों को भी चर्चा में पद विज्ञान या रूप विज्ञान में इन पदों का विचार किया जाता है। पद या रूप एक–दूसरे के पर्यायवाची है। सामान्यतः शब्द व पद के लिए व्यवहार में 'शब्द' का ही प्रयोग होता है परन्तु इनमें परस्पर भेद है। शब्द एक सार्थक इकाई है जबकि शब्द का वाक्य में प्रयोग समर्थरूप 'पद' कहलाता है।

संस्कृत में 'शब्द' या मूल रूप को 'प्रकृति' या 'प्रातिपदिक' कहा जाता है और सम्बन्ध स्थापन के लिए जोड़े जाने वाले तत्व 'प्रत्यय'। पाणिनी के अनुसार सुबन्त तथा तिड्न्त को पद कहते हैं। यहॉ प्रत्यय या विभक्ति को सुप् और तिड्, कहा गया है। स्वांगला–बोली में पद निर्माण प्रक्रिया में विभक्तियों की समानता संस्कृत के समान है, जिसे निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा दर्शाया गया है–

	प्रातिपदिक	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
संस्कृत–भाषा	राम	रामः	रामौ	रामाः
स्वांगला–बोली	राम	रामे	रामगुई	रामज़ि

इस प्रकार स्वांगला–बोली में भी सभी विभक्तियों में सुबन्त पदों का निर्माण सम्भव है।

यही नियम क्रिया पदों पर भी घटित होता है। क्रिया पद का मूल रूप धातु है, और धातु के अन्त में तिड. प्रत्यय जुड़ कर क्रिया रूप बनते हैं। संस्कृत 'दा' धातु का स्वांगला–बोली में रंड्री धातु समानार्थक है। इसका लकारिक रूप भी संस्कृत समान्तर है। संस्कृत–भाषा में 'देना' अर्थ में दा धातु का लकारिक रूप इस प्रकार है–

दा धातु (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	ददाति	दतः	ददति
म0 पु0	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ0पु0	ददानि	दद्वः	दधः

दसी प्रकार स्वांगला–बोली में 'देना' अर्थ में रंड्री धातु का रूप इस प्रकार है–

रंड्री धातु (लट् लकार)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र0 पु0	रंड्रा	रमोगु/रंड्रादोगु	रमोर/रंड्रदोरे
म0 पु0	रंड्रादन	रंड्रादोशि	रंड्रादनी
उ0पु0	रंड्रादग	रमोशि	रमोनि

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि किसी भी प्रातिपदिक या धातु को पद बनाए बिना उसका वाक्यगत प्रयोग नहीं हो सकता। जब पद का वाक्यगत प्रयोग होता है, तो पद के साथ सम्बन्ध तत्व भी जुड़ जाता है। हिन्दी के सारे कारक चिन्ह जैसे– ने, को, से, के लिए, पर, का, के, की या परसर्ग इसी वर्ग के हैं और उनका कार्य दो या अधिक शब्दों के वाक्य में सम्बन्ध दिखलाना ही है। हिन्दी में वाक्यों का स्थान परिवर्तन होने पर वाक्य पूर्णतः परिवर्तित हो जाता है। जबकि स्वांगला–बोली में संस्कृत के समान वाक्यों का स्थान परिवर्तित करने पर भी वाक्य में शब्द के अर्थ का परिवर्तन कभी नहीं होता।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अतः समाज में रहकर वह भाषा के माध्यम से विचार–विमर्श करता है। भाषयी आदान–प्रदान के कारण एक भाषा के शब्द दूसरी भाषा में आते रहते हैं।[1] मूल निवासियों तथा बाहर से आए विदेशियों के पारस्परिक सम्बन्ध और सामाजिक आदान–प्रदान से भाष में जो परिवर्तन हुआ है उसके परिणामस्वरूप वर्तमान भाषाओं में कई तत्वों का समावेश लक्षित होता है। कोई भी भाषा एक सीमित क्षेत्र में रहकर नहीं पनपती है। हजारों वर्षों की इस लम्बी अवधि में इतिहास ने कितनी ही करवटें ली हैं और असंख्य संघर्षों का सामना किया है। लाहौल के इस क्षेत्र में जहां तिब्बती–मंगोल आए हैं, वहीं हाल ही में यहां अंग्रेजों का शासन भी रहा है। इस शासन ने भी अपनी शब्दावली दी है। इस प्रकार प्रत्येक भाषा में अन्य भाषाओं के शब्द अवश्य समाविष्ट होते हैं। स्वांगला–बोली इस दिशा में अपवाद नहीं हो सकती।

इतिहास को आधार मानकर सम्पूर्ण शब्द भण्डार को तत्सम, तद्भव, देषी और विदेशी, इन चार वर्गों में रखने की परम्परा रही है।[2] इस वर्गीकरण का प्रयोग सर्वप्रथम भरतमुनि ने अपने ग्रन्थ 'नाट्य शास्त्र' में किया है। उन्होंने शब्दों के तीन भेद किए हैं[3] – तत्सम, तद्भव और देशी। उन्होंने तत्सम को समान, तद्भव को विभ्रष्ट एवं देशी को देशी ही कहा है।

अतः स्वांगला–बोली की शब्द सम्पदा में अनेक भाषाओं के शब्दों का समावेश हुआ है। इसे अग्रलिखित शीर्षकों में देखा जाना उपयुक्त है –

1. तत्सम शब्द
2. तद्भव शब्द
3. देशी शब्द तथा
4. विदेषी शब्द

1 मोलू राम ठाकुर, पहाड़ी भाषा, पृ0 15

2 भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान, पु0 104–106

3 त्रिविध तच्चविज्ञेयं नाटययोगे समासतः।

समानशब्दं विभ्रष्टं देशीगतमथापि च।। नाटय शा0 17/3

1 तत्सम शब्द

तत्सम का शाब्दिक अर्थ है तत 'उसके' + 'सम' अर्थात संस्कृत के समान। अतः तत्सम शब्दों के बन्तर्गत उन शब्दों को ग्रहण किया जाता है जो संस्कृत के ठीक उसी रूप में वर्तमान भाषाओं या बोलियों में संक्रान्त हो गए हों। ऐसे शब्द प्रायः दो प्रकार से आते हैं – एक साहित्य के माध्यम से और एक सामान्य बोल – चाल के माध्यम से। यद्यपि स्वांगला – बोली में साहित्यिक रचनाएं उपलब्ध नहीं होती हैं, तथापि इनमें अनेक संस्कृत भाषा के शब्द ऐसे हैं जिनका बिना किसी विकार के आज तक प्रयोग होता आ रहा है। इस प्रकार स्वांगला – बोली में पाए जाने वाले कतिपय तत्सम शब्द अग्रलिखित हैं–

आत्मा (आत्मा), आशा (आशा), ओम (ओम0189, कण (कण), कथा (कथा, खार (खार), खुर (खुर) गुण (गुण), गुरू (गुरू), तौल (तौल), दया (दया), दशा (दशा), दान (दान), देश (देश), नगर (नगर), नरक (नरक), नाग (नाग), पाप (पाप), प्राण (प्राण), पूजा (पूजा), प्रेत (प्रेत), मन्त्र (मन्त्र), माया (माया), रथ (रथ), राग (राग), राम (राम), रोग (रोग), संग (संग), सन्यास (सन्यास) आदि।

2 तद्भव शब्द

तद्भव से अभिप्राय यह है कि उससे (तत्सम से) बने शब्द। शाब्दिक रूप से तत का अर्थ 'उससे' और 'भव' का अर्थ उत्पन्न है। यहां 'उससे' शब्द का अभिप्रायः संस्कृत– भाषा से है। जिन शब्दों का मूल आज भी संस्कृत– भाषा है, परन्तु सूक्ष्म विकार आ जाने के कारण उन्हें तत्सम की श्रेणी में नहीं रखा गया है, तदभव कहलाते हैं। स्वांगला– बोली में तद्भव शब्दों का वर्णन किया जा रहा है। जिनमें प्रज्ञिम शब्द स्वांगला–बोली का एवं द्वितीय शब्द संस्कृत का रखा गया है और शब्दों का अर्थ – निर्देश कोष्ठक में किया गया है। स्वांगला – बोली के तद्भव शब्द अगलिखित हैं–

औषद – औषधि (दवाई), अमास – अमावस्या, क्रग–काक (कौआ), कबूतर–कपोत (कबूतर), करेला–कारवेल्स (करेला), आरू–आद्रालु (आरू), कैला–कदली (कैला), कांसा–कांस्य (कांसा), घटट–घरटट (पनचक्की), कण्डह–कण्टक (कॉटा), चम–चर्म (चमड़ी), छगड़–छागल (बकरी), ज्वान–युवन (जवान), जौ–यव, ताम्बा–ताम्र (ताम्बा), पदीना–उपोदका (पदीना), भई–भगिनेयी (भानजी), भईयॉ– भागिनेय (भनजा), भत्तरा–भात्रीय (भतीजा), पण्डत–पण्डित (पण्डित), मोर–मयूर (मोर), म्हिना–मास (मास), घीत–गीत (गीत), लठी–यष्टि(लाठी), बिजली–विद्युत (बिजली), कैंची – कर्तरी (कैंची), मूंगी – हिड.गु (हिंग), साड़ी–शारिका (साड़ी), श्राप– श्राप (शाप), वण्ह– वन (वन), सरग– स्वर्ग (स्वर्ग), घई–गवैण (गौशाला) आदि।

3 देशी शब्द

देशी वर्ग में वे शब्द आते हैं जिनकी व्युत्पति अज्ञात होती है। भरत मुनि के अनुसार जो शब्द न तत्सम न ही तद्भव हैं प्रत्युत इन दोनों से भिन्न होने पर इन्हें देशी शब्द की संज्ञा दी गई है। स्वांगला–बोली में ऐसे अनेक शब्द निम्नलिखित हैं–

योंखा (नीचे), तोरीखा (ऊपर) फेट्टे (तिरछभ) बंग (घोंसला) नगि (नरम) चिसि (खुजली) टाऊणे (बहरा) में (आग) रग (पत्थर) मेह (नहीं) टोइज (किसी चीज के ऊपर) पोयां (किसी चीज के नीचे) कुड्री (कहना) कोग (कहूंगा) हयांर (अन्धेरा) लन (हवा) मोडे (बड़ा) क्वाजी (छोटा) बे (बीज) सोई (ठण्डा) जई (खाना) तुमी (पीना) पोफी (भागना) अम (रास्ता) टिगली (अण्ड) शाह (मांस) आदि शब्द स्वांगला–बोली में देषी शब्द श्रेणी में आते हैं।

4 विदेशी शब्द

स्वांगला–बोली में विदेशी शब्द भी समाविष्ट है। यह सर्वविदित है कि शताब्दियों से विदेशियों ने भारतवर्ष पर चिरकाल तक शासन किया। फलतः अनेक विदेषी शब्दों का आधुनिक भारतीय भाषाओं में समावेश हो गया। अतः भारतीय भाषाओं की तरह स्वांगला–बोली में भी ऐसे शब्द मिलते हैं जो राजस्व, नीति एवं

अदालत से सम्बन्धित हैं। ऐसी भाषाओं में अरबी, फारसी और अंग्रेजी प्रमुख हैं। स्वांगला– बोली में पाये जाने वाले विभिन्न भाषाओं के शब्द निम्नलिखित हैं।

अरबी भाषा के शब्द

स्वांगला–बोली में अरबी भाषा के शब्द भी उपलब्ध होते हैं। जिनमें प्रथम स्वांगला, द्वितीय अरबी तृतीय शब्द कोष्ठक में अर्थ निर्देशक हैं जो अग्रलिखित हैं–

तन्खाह–तन्ख्वाह (वेतन) कताग–किताब (पुस्तक) कनू–कानून (नियम) खतम–खत्म (समाप्त) जुलम–जुल्म (अत्याचार) इज़त–इज्ज़त (सम्मान) नकल–नकल (प्रतिलिपि) मुलख–मुलक(देश) नफा–नफा (लाभ) जरबा–जुराब (जुराब) तसील– (तहसील) नब्ज फजूल फसल, फायदा, दौलत, मौसम आदि शब्द अरबी भाषा से स्वांगला–बोली में उपलब्ध हैं।

फारसी भाषा के शब्द

किस्ती (नाव) जहाज (वायुयान) दफ्तर (कार्यालय) जुरमाना (विलम्ब शुल्क) दाखल (प्रदेश) सजा (दण्ड) आमदनी (कमाई) चलाक (चालाक) चादर, चुगली, अफसोस, अंदाजा, अबारा, कारखाना, कमीना, खानदान, मजा, मस्त रसीद, सौदा, पदीना (पोदीना) आदि शब्द फारसी भाषा से स्वांगला–बोली में आए हैं।

अंग्रजी भाषा के शब्द

आडर (आर्डर), टिगट(टिकट), डलेवर (ड्राईवर), सीमिन्ट (सीमेन्ट), टैम (टाइम), रिजर (रेंजर) गारड (गार्ड) कोज (कॉलेज) कुमेटी (कमेटी) लम्प (लैम्प) पा, पासबुक, टेलिविजन, कप, फीस, कोट, पैन्ट, मीटि।ग, डिग्रि, डिपू, फार्म, नोट, नोटस, प्रेस, वोट, अफसर, जेल, दर्जन, राशन, लाइन, स्प्रे, स्कूल, स्टेशन, सूट, होटल आदि शब्द अंग्रेजी से स्वांगला–बोली में उपलब्ध होते हैं।